बाइबल टीचर

वर्ष 15 नवम्बर 2018 अंक 12

सम्पादकीय

एक मसीही स्त्री कलीसिया के लिये क्या कर सकती है?

मैं अपने इस लेख को प्रेरित पौलुस के इन शब्दों से आरंभ करूंगा जब उसने कहा था, कि ''क्योंकि तुम सब विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। (गलतियों 3:26-27)। यहां हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस ने यह दिखाया कि स्त्री की मसीहीयत में कितनी इज्जत है। पौलुस कहता है, बपतिस्मा लेने के द्वारा मसीह यीशु में स्त्री पुरुष एक है। स्त्री को कई स्थानों पर पुरुष से नीचा समझा जाता है परन्तु मसीहीयत में ऐसा नहीं है। यहूदी लोग किसी भी छोटी बात पर अपनी पत्नी को तलाक दे देते थे, परन्तु यीशु ने शिक्षा दी थी कि जिसे शादी के बंधन में जोड़ा गया है उसे मनुष्य अलग न करें। (मत्ती 19:4-6)।

बाइबल सिखाती है कि पति को अपनी पत्नी के साथ अच्छी तरह से रहना चाहिए तथा उनके साथ सही व्यावहार करना चाहिए ''वैसे ही हे पतियों तुम बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो'' (1 पतरस 3:7)। प्रत्येक पति को यह समझना चाहिए कि आपकी पत्नी आपके जीवन में कितना महत्व रखती है। कई लोग कहते हैं कि वह आदमी के पांव की जूती के समान है। यह एक बहुत ही नीच बात है जो पुरुष की मानसिकता को दिखाती है। कई लोग सोचते हैं कि उसका काम केवल यह है कि पति को प्रसन्न रखना तथा घर का काम करना, एक अच्छी पत्नी यह सब करती है परन्तु हमारी सोच कई बार उसके प्रति उचित नहीं होती। एक अच्छा पति अपनी पत्नि के कार्य में सहयोग करता हैं वह अपनी पत्नी का घर के कार्यों में हाथ बटाता है। कई देशों में तो स्त्रियों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता है। यह बात बहुत गलत है और ऐसी मानसिकता बिल्कुल बाइबल के विरूद्ध है।

जब हम बाइबल में स्त्री का कार्य देखते हैं तो हमें यह देखने को मिलता है कि अत्मिक बातों में कुछ ऐसे कार्य हैं जो केवल पुरुष को ही करने हैं। बाइबल में पौलुस तथा पतरस ने कहा है कि पत्नि को पति के आधीन रहना है।

मसीह में एक होने का अर्थ यह नहीं है कि पति पत्नी के कलीसिया में कार्य बदल जाते हैं। अर्थात जो कार्य पुरुष को करने हैं वे पुरुष को करने है तथा जो कार्य स्त्रियों को करने है वे स्त्रियों को करने हैं। दोनों को अपनी सीमाओं में रहकर कार्य को करना है। परमेश्वर ने दोनों के कार्य को छोटा और बड़ा करके नहीं दिखाया है।

कुछ ऐसी बातें है जो स्त्रियां कलीसिया में नहीं कर सकती और यह बात परमेश्वर का वचन बाइबल कहती है। बाइबल में लिखा है, ''सो मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है। (1 कुरि. 11:3)। सिर का अर्थ होता है बड़ा या मुखिया जिसके आधीन हम रहते हैं। यह बाइबल अनुसार एक शिक्षा है, अर्थात परमेश्वर, यीशु मसीह, पुरुष तथा स्त्री यानि हम सब जो मसीही है हम मसीह के दास हैं तथा मसीह हमारा मुखिया हैं और बाइबल अनुसार स्त्री पुरुष का सिर नहीं है या हैड नहीं हैं। (इफि. 5:22)। प्रचार करने के विषय में बाइबल बताती है कि प्रचार करना या कलीसिया में सिखाने की बात जो है वह पुरुष की है। प्रेरित पौलुस कहता है ''और स्त्री को पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।'' (1 तीमु. 2:11-12)। इसलिये हम पढ़ते हैं कि जहां पुरुष लोग उपस्थित हैं वहां स्त्री न सिखा सकती है न प्रचार कर सकती है। हां, जहां केवल स्त्रियों की मण्डली हैं वहां स्त्री प्रचार कर सकती है। यह बाइबल की शिक्षा है। कलीसिया में अगुवाई का कार्य केवल पुरुषों को दिया गया है। 1 तीमु 2:8 में भी प्रेरित कहता है कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना करें। 1 कुरि. 14:34 में भी यह बात लिखी है कि ''स्त्रियों को कलीसिया में चुप रहना है।'' पौलुस ने बोला था कि, ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुपचाप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है, जैसे व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है। और वह आगे यह भी कहता है कि जो मैं लिख रहा हूं यह प्रभु की आज्ञाएं हैं। शायद कई स्त्रियों को पौलुस की यह बात अच्छी न लगे, परन्तु वह कहता है कि यह जान लो यह प्रभु की आज्ञा है। जो स्त्रियां खुलेआम टीवी पर तथा सभाओं में प्रचार करती हैं उन्हें इसे बात से बड़ा क्रोध आयेगा। बहुत सी स्त्रियां बहुत अच्छा प्रचार करती है; परन्तु हम क्या करें, जबकि परमेश्वर का वचन कह रहा है तो हम इसे मानना चाहिए। आप परमेश्वर की बात मानेंगे या अपनी इच्छा पूरी करेंगे?

आज बाइबल की इस आज्ञा को सरेआम तोड़ा जा रहा है। बाइबल हमें सफाई से बताती है कि कलीसिया में सिखाना तथा प्रार्थना का कार्य केवल पुरुषों

का है। इसलिये परमेश्वर का भय मानते हुए हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि एक दिन परमेश्वर के न्याय आसन के सामने हमें इसका जवाब देना पड़ेगा। प्रेरित पौलुस स्त्रियों का दुशमन नहीं था परन्तु वह बताना चाहता है कि यह परमेश्वर की आज्ञा है। कई स्त्रियां बहुत अच्छा प्रचार कर सकती हैं तथा प्रार्थना में अगुवाई भी कर सकती है परन्तु हमें परमेश्वर के वचन के विरूद्ध नहीं जाना चाहिए।

इस बात के विषय में प्रेरित पौलुस एक कारण भी देता है लिखा है, ''क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधनी हुई। (1 तीमु. 2:13-14)। यह बात समझने में बड़ी कठिन लगती है, परन्तु हमें इसलिये माननी है, क्योंकि यह परमेश्वर की आज्ञा है। आज बहुत सी स्त्रियां अपने को पास्टर तथा ऐलडर भी कहती है। उन्हें शायद यह भी नहीं मालूम कि बाइबल अनुसार पास्टर केवल पुरुष होते हैं और इसके विषय में हम 1 तीमुथियुस उसके तीन अध्याय में पढ़ते हैं जहां पास्टर या ऐलडर की योग्यताओं के विषय में लिखा है। आज परमेश्वर के वचन की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है। लोग अपनी मनमानी कर रहें हैं परन्तु यह नहीं समझते कि एक दिन उन्हें परमेश्वर के न्याय आसन के सामने जवाब देना पड़ेगा। (2 कुरि. 5:10)। कोई स्त्री चाहे जितना जोर से कहे कि मैं एक पास्टर हूं, उसके कहने से या किसी कलीसिया द्वारा कहने से वह पास्टर नहीं बन जाती। यदि मैं जोर से चिल्लाकर बोलूं कि मैं प्रधानमंत्री हूं तो इससे मैं प्रधानमंत्री नहीं बन सकता। हम परमेश्वर की बात को मानेंगे या मनुष्य की?

एक मसीही स्त्री अपने पति की प्रभु के कार्य में सेवा कर सकती है। जैसे प्रीसिल्ला करती थी। वह स्त्रियों को इकट्ठा करके उन्हें सिखा सकती है। बच्चों को सन्डे स्कूल में सिखा सकती है। वह अपने पति को सिखा सकती है। (1 पतरस 3:1-2)। परन्तु बाइबल कहती है कि पुरुष पर आज्ञा नहीं चला सकती। प्रेरित पतरस कहता है, ''और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थी, अपने आप को उसी रीति से संवारती और अपने पति के आधीन रहती थी। (1 पतरस 3:5)।

कलीसिया को कोई अधिाकार नहीं कि वह बाइबल के विरूद्ध जाकर अपने कानून बनाए। जो लोग अपने कानून कलीसिया पर थोंपते हैं उन्हें परमेश्वर के वचन से कोई मान्यता नहीं है। चर्च शायद यह नियम बनाये कि स्त्रियां कलीसियां में अगुवाई कर सकती है परन्तु याद रखिये उन्हें परमेश्वर कोई मान्यता नहीं देगा। यह उसकी आज्ञा का उल्लंघन होगा। (नीतिवचन 14:12)। परमेश्वर ने स्त्री-पुरुष को अपना रोल अदा करने की आज्ञा दी है। जैसा उसने वचन में कहा है, हम वैसा ही करें।

परन्तु, मुझे क्या मिलेगा?

सनी डेविड

मनुष्य का स्वभाव बहुधा बड़ा ही स्वार्थी रहा है। प्रत्येक कार्य करने से पहले मनुष्य अपने मन में सोचता है कि "इसके फलस्वरूप मुझे क्या प्राप्त होगा।" मनुष्य का स्वार्थीपन यहां तक बढ़ चुका है कि वह परमेश्वर की सेवा, उपासना, तथा भक्ति भी तभी करना चाहता है यदि परमेश्वर कि ओर से उसे कुछ आशिष मिले। आपने बहुधा कितने ही लोगों को यह कहते सुना होगा कि, "मैंने परमेश्वर को बहुत माना व उससे बहुत प्रार्थना की, परन्तु तौ भी उसने मेरी नहीं सुनी, जिस वस्तु को मैं चाहता था वह मुझे नहीं प्राप्त हुई और इसके विपरीत मैं और कठिनाइयों में पड़ गया हूं, इसलिये कोई परमेश्वर है ही नहीं, मैं परमेश्वर में विश्वास नहीं करता।" वास्तव में, बात यह है कि ऐसे लोग सच्चे व साफ हृदय से प्रार्थना नहीं करते, वे प्रार्थना अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये करते हैं। लोग परमेश्वर व उसके धर्म को भी स्वार्थ के तराजू में तोलते हैं।

मेरा परिचय बहुतेरे ऐसे लोगों से हुआ है, या उनके पत्र मेरे पास आए हैं, जिन्होंने अपनी इस अभिलाषा को प्रगट किया है कि वे मसीही बनना चाहते हैं। प्रत्येक ने यह स्वीकार किया कि मुझे यह धर्म ही सच्चा धर्म लगा व मुक्ति इसी में है क्योंकि इसमें एक मुक्तिदाता, यीशु मसीह है, परन्तु इसी के साथ-साथ प्रत्येक ने यह भी कहा कि "मसीही तो मैं बनना चाहता हूं, परन्तु मुझे क्या मिलेगा?" बहुतेरे लोग लिखते हैं, "मैं मसीह धर्म स्वीकार करना चाहता हूं.... परन्तु क्या आप मेरी पढ़ाई में मदद करेंगे.... परन्तु क्या आप मेरी नौकरी लगाने में सहायता करेंगे? इत्यादि, इत्यादि।" कुछ समय पूर्व एक सज्जन को कहीं से पता चला कि मैं यीशु के सुसमाचार का प्रचार करता हूं, वे मेरे पास आए और कहने लगे, "हमारे मोहल्ले में लगभग 200 से भी अधिक लोग रहते हैं मैं उनका अगुवा हूं वे मेरी बहुत सुनते हैं, मैं चाहता हूं कि उन्हें आपके हाथों में सौंप दूं, आप उन्हें मसीही बना लीजिए, मैं नहीं चाहता कि वे इधर-उधर की किसी गलत शिक्षा में पड़ जाएं इसलिये आप हमारी सहायता कीजिए।" मैंने कहा, आप मुझे उस जगह का पता दे दीजिए मैं वहां अवश्य जाऊंगा और प्रचार करूंगा, यदि आप किसी निश्चित दिन को सभा रखना चाहते हैं तो मुझे खबर कर दीजिएगा। जवाब में वे बोले, "यह तो ठीक है, सभा रखेंगे और आपको बोलने के लिये बुलाएंगे, परन्तु अभी वे बेचारे बड़ी कठिनाई में हैं। उन्हें एक पानी के नल की आवश्यकता है; बेचारों को पानी की बड़ी कठिनाई है, और बच्चों को स्कूल में बैठने के लिए चटाई चाहिए, एक ब्लैक-बोर्ड की भी आवश्यकता है, तथा एक टीचर हमने रखी है जिसे पांच हज़ार रुपए महीना बच्चों

को पढ़ाने के लिये देना पड़ेगा। आप इतना कर दीजिए, इससे उनकी मदद भी हो जाएगी तथा कुछ प्रभाव भी पड़ जाएगा... मैं सभा का प्रबंध करूंगा और आपको अवश्य बुलाऊंगा....”।

लोग सोचते हैं कि मसीही बनना फूलों की सेज पर चलना है, वे सोचते है कि मसीही बनने से उनकी कठिनाईयां हल हो जाएंगी तथा भौतिक व शारीरिक रूप से उनका जीवन बहुत अच्छा हो जाएगा। वास्तव में लोग सच्ची मसीहीयत से बिलकुल अज्ञात है। मसीहीयत के प्रति लोगों का इस प्रकार का स्वभाव इसलिये है क्योंकि उन्होंने कभी भी बाइबल का अध्ययन नहीं किया, वे इस विशेष बात से अज्ञान है कि मसीहीयत स्वभाव में आत्मिक है, व यह संसार की नहीं है, इसका संबंध स्वर्ग से है। मसीह, इसका संस्थापक, स्वर्ग से आया तथा फिर स्वर्ग में वापस चला गया, और जाने से पहले उसने यह प्रतिज्ञा की कि वह एक दिन फिर से वापस आएगा ताकि अपने विश्वासियों को अपने साथ ले जाए ताकि वे उसके साथ हमेशा तक रहें देखिए (यूहन्ना 14:3 तथा प्रेरितों 1:9-11)।

यीशु मसीह जब संसार में था तो उसने अपने शिष्यों को यह कहकर शिक्षा दी, “इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिंता न करना कि हम क्या खाएंगे? ओर क्या पिएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते है, न काटते हैं, और न खेतों में बटोरते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है; क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है, जो चिंता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? और वस्त्र के लिये क्यों चिंता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते, न कातते है। तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव से उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए नहीं था। इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों तुम को वह क्यों कर न पहिनाएगा? इसलिये तुम चिंता करके यह न कहना कि क्या खाएंगे, या क्या पिएंगे, या क्या पहिनेंगे? क्योंकि अन्य जाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।” (मत्ती 6:25-33)

यीशु मसीह ने स्वयं-स्वार्थहीन तथा आत्मपरित्याग का जीवन व्यतीत किया तथा उसने अपने चेलों को भी ऐसा ही जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी। उसका सारा जीवन पीड़ाओं व कष्टों से भरपूर था। यद्यपि, वह परमेश्वर का पुत्र था तौभी उसने एक चरनी में जन्म लिया, जहां पर गाय-बैल बांधे जाते थे (लूका 2:7)। जब वह बड़ा हुआ उसके पास अपना कोई घर नहीं था। एक बार एक शास्त्री ने उसके पास आकर कहा, “हे गुरु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे-पीछे हो लूंगा” यीशु ने उसे उत्तर दिया, “लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य

के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।" (मत्ती 8:19, 20)। एक बार यात्रा करने के लिये उसने किसी दूसरे से एक पशु मांगा था। (मत्ती 21:2)। और अंत में जब वह मर गया तो उसे किसी अन्य व्यक्ति की कब्र में गाड़ा गया (मत्ती 27:60)।

मसीह ने कभी भी अपने अनुयायियों से सरल जीवन की प्रतिज्ञा नहीं की, न ही उसने यह कहा कि मसीही होने से उनकी सब कठिनाइयां हल हो जाएंगी। उसने एक बार, अपना वर्णन करते हुए कहा कि जबकि लोगों ने मुझे सताया तो वे तुम्हें भी सताएंगे। एक अन्य स्थान पर अपने चेलों को उपदेश देते हुए उसने कहा, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निंदा करें, और सताए और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनंदित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।" (मत्ती 5:11, 12)।

मसीह में विश्वास तथा उसकी आज्ञाओं को माने बिना कभी कोई मसीही नहीं बन सकता। किसी भी प्रकार से कोई घूस अथवा लालच लेकर या देकर कोई भी वास्तव में एक मसीही नहीं बन सकता, न ही किसी को बलपूर्वक मसीही बनाया जा सकता है। यीशु मसीह ने कहा, सुनिए, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इंकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।" (मत्ती 16:24)। इस में कुछ संदेह नहीं कि हजारों ऐसे लोग हैं, संसार भर में जिन्हें मसीही समझा जाता है, परन्तु वास्तव में वे नहीं है। उन्हें कुछ लोगों अथवा संगठनों ने विभिन्न परिस्थितियों में अपनी-अपनी मंडलियों अथवा कलीसियाओं में सम्मिलित कर लिया है, वास्तव में इन लोगों व संगठनों का हमारे प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया से कोई भी संबंध नहीं है। (देखिए मत्ती 15:9 तथा 13)। उन्होंने, किसी कारणवश, मसीह के नाम को स्वीकार कर लिया है, वे उसके नाम को ही अपने ऊपर रखते हैं परन्तु अपने कामों से उसका और उसकी शिक्षाओं का इंकार तथा विरोध करते हैं।

मसीही बनने पर आप को क्या मिलेगा, इसका उत्तर जानने से पहले यह याद रखें कि मसीही धर्म, स्वाभाव में, भौतिक अथवा सांसारिक नहीं है, यह आत्मिक है। इसमें आपको आप के पिछले पापों से क्षमा प्राप्त होगी, यह आप की ऐसी अगुवाई करेगा कि आपके आगे के जीवन में पाप आप पर प्रभुत्ता न करने पाएगा। यह एक ऐसा मार्ग है जो कि सही है व कभी भी गलत दिशा में नहीं ले जाएगा। यह आप के मन में आपको अनन्त शांति प्रदान करेगा तथा आपके जीवन में अकथनीय तथा आशिष का कारण बनेगा। इसमें आप परमेश्वर के समीप रहेंगे तथा आपके पास अनन्त जीवन की आशा होगी। (देखिए कुलुस्सियों 1:5 तथा यूहन्ना 14:1-3)। और अंत में, वे जो वास्तव में मसीही जीवन व्यतीत करेंगे, जीवन का मुकुट प्राप्त करेंगे (प्रकाशितवाक्य 2:10), अर्थात स्वर्ग में परमेश्वर के साथ आनन्दमय अनन्त जीवन। किसी को, इससे अधिक और क्या चाहिए? प्रभु यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" (मत्ती 16:26)।

परमेश्वर के वचन से बहस न करें

जे. सी. चोट

बहुत सारे लोग परमेश्वर के वचन की केवल वो बातें पसंद करते हैं जो उन्हें अच्छी लगती है। तब यह होता है कि जो मुझे पसंद होगा। उसे ही मानुंगा वह बहस करते हैं कि जैसा हम सोचते हैं यह बात वैसे ही होनी चाहिए। इसे कहते हैं, जो अच्छा लगे उसे अपना लो और जो बुरा लगे उसे जाने दो। यह वचन का गलत इस्तेमाल करना है। हमें अच्छी तरह और ईमानदारी से इसे पढ़ना चाहिए तब परमेश्वर की सारी इच्छा हम उसके वचन के द्वारा जान सकते हैं। सच्चाई को जानने के पश्चात हमें उसे स्वीकार लेना चाहिए। जानबूझकर वचन को तोड़ना या मोड़ना हमें उसकी इच्छा के विरूद्ध ले जाता है। बाइबल की बातों को हमें वैसे ही मानना चाहिए जैसा उसमें लिखा है। सिर्फ आधा सत्य काफ़ी नहीं है।

आज बहुत से लोग यह सिखाते है कि केवल यीशु में विश्वास कर लो तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा इस बात को सपोर्ट करने के लिये वे बाइबल की इन आयतों को इस्तेमाल करते हैं जैसे कि यूहन्ना 3:16, 3:36; 5:24 तथा प्रेरितों 16:31 तथा ओर भी कई पद है जो लोग इस्तेमाल करते हैं। अब जब हम दूसरे पदों को देखते हैं तो लोग बहस करते हैं कि यह सही नहीं है। विश्वास करने के बारे में हम कोई बहस नहीं करते, क्योंकि बाइबल में ऐसी बात हमें देखने को मिलती है। आजकल अधिकतर लोग केवल विश्वास के द्वारा उद्धार की शिक्षा देते हैं। सारी आयतें यह सिखाती है कि विश्वास बहुत आवश्यक है परन्तु केवल विश्वास से उद्धार नहीं हो सकता। इसके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं कि विश्वास के साथ और भी बातें आवश्यक है।

यीशु ने हमें बताया है कि उद्धार पाने के लिये मन फिराना भी आवश्यक है। (लूका 13:3) प्रेरित पौलुस कहता है परमेश्वर हर जगह अब मन फिराने की आज्ञा देता हैं (प्रेरितों 17:30)।

बाइबल के अन्य पद भी मन फिराने के विषय में बोलते हैं। हम देखते हैं कि उद्धार पाने के लिये मन फिराना आवश्यक है। अब कोई शायद कहे कि केवल पापों से मन फिराना काफी है इस पर कोई बहस करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हम पापों से अपना मन फिराएं।

अब बाइबल यह भी कहती है कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना भी आवश्यक है। (प्रेरितों 22:16; रोमियों 6:3, मरकुस 16:16)। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल बपतिस्मा लेना काफी है। जैसे विश्वास करना तथा पापों से मन फिराना आवश्यक है वैसे ही बपतिस्मा भी आवश्यक है। यदि कोई बपतिस्मे के बारे में बहस करता है तो उसे यह समझना चाहिए कि यह परमेश्वर की आज्ञा है। हमें सारी सच्चाई को मानना है। आधी सच्चाई मानने से कोई लाभ नहीं होगा।

पतरस ने अपना प्रचार करते हुए लोगों से कहा था, कि मन फिराओ और तुम में हर एक अपने पापों की क्षमा के यीशु के नाम में बपतिस्मा ली तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे (प्रेरितों 2:38)। बहस करने की बजाय हमें इसे स्वीकार करना चाहिए। जब भी हम किसी के साथ, बाइबल अध्ययन करते हैं तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम सच्चाई को मानेंगे।

परमेश्वर ने एक ही आयत में सारी बातें नहीं बताई है। हमें बाइबल में से उद्धार के विषय में सारी आयतों को पढ़ना चाहिए। सुसमाचार को बताने के लिये हमें सारे पद देखने की आवश्यकता है। केवल एक आयत पर आकर मत रूकिये।

कभी भी बाइबल को ऐसे नहीं पढ़ें कि हमें बहस करनी है। प्रभु के इन शब्दों को याद रखिये, उसने इस प्रकार से कहा था, ''कौन है मेरी माता? और कौन है मेरे भाई? और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा: देखो, मेरी माता और मेरे भाई यह है। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहिन और माता है। (मत्ती 2:4)।

बलवन्त से मीठी वस्तु निकली

माइकिल एल. किंग

दानियों के कुल का सोरावासी मानोह नामक एक पुरुष था। उसकी पत्नी बांझ थी इस कारण उसके कोई संतान नहीं थी। इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, "सुन, बांझ होने के कारण तेरे बच्चा नहीं, परन्तु अब तू गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा। इसलिए अब सावधान रह कि न तो दाख़मधु या और किसी भांति की मंदिरा पिए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए और उसके सिर पर उस्तरा न फिरे, क्योंकि वह जन्म से ही परमेश्वर का नाज़िर होगा। यह वाचा इतनी महत्वपूर्ण थी कि उसकी माता न तो किसी प्रकार की मंदिरा पी सकती थी, न कोई अशुद्ध वस्तु खा सकती थी जब तक कि पुत्र का जन्म न हो जाए। और इस स्त्री के एक बेटा उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम शिमशोन रखा और वह बालक बढ़ता गया, और यहोवा उसको आशीष देता रहा ताकि वह बुराई करने वाले इस्राएलियों को पलिस्तियों के कब्जे से छुड़ाए। (न्यायियों 13:1-14)।

यद्यपि जिन बातों को न करने के लिये उसको आज्ञा दी गई थी, वह ही उसके लिये बाधक बन गई।

शिमशोन तिम्ना को गया और वहां एक पलिश्ती स्त्री को देखा। तब उसने अपने माता-पिता से कहा, "तिम्ना में मैंने एक पलिश्ती स्त्री को देखा है, अब तुम उससे मेरा विवाह करवा दो।"

तिम्ना को जाते समय, वहां उसके सामने एक जवान सिंह गरजने लगा। यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तौ भी उसने उस शेर को ऐसे फाड़ डाला जैसे कोई बकरी का बच्चा फाड़ दे।

कुछ दिनों बाद जब वह फिर तिम्ना को लौटा तो उस सिंह की लोथ को देखने के लिये मार्ग में मुड़ गया; तो क्या देखा कि सिंह की लोथ में मधुमक्खियों का एक झुंड और मधु भी है। उसने वह मधु खाया और अपने माता-पिता को भी, बिना बताए कि कहां से आया है, दिया, और उन्होंने भी उसे खाया।

शिमशोन ने पलिश्ती लोगों से कहा, "मैं तुम से एक पहेली कहता हूं, यदि तुम उसे सात दिन के अन्दर बूझकर अर्थ बता दो तो मैं तुम्हें तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े दूंगा।" उसने उनसे कहा, "खाने वाले में से खाना और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकलती है।" पलिश्ती उसका अर्थ नहीं बता पाए और शिमशोन की पत्नी को डरा धमका कर शिमशोन से उसका अर्थ मालूम करवाया (न्यायियों 14:14-20)।

शिमशोन ने उस प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया जिसके लिये उसको मना किया गया था कि न तो किसी अशुद्ध वस्तु को छूना और न उसे खाना। जब उसने सिंह को अपने हाथों से मारा तो एक अशुद्ध वस्तु को छुआ। जब उसने मधु खाया जो कि एक लोथ से लिया गया था तो उसने दोबारा यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया।

किसी वस्तु का अन्दर आकर्षित करने वाला रूप अक्सर छल-कपट वाला होता है, जो बाद में भयंकर, विकराल, चोट पहुंचाने वाला और कड़वाहट से भरा रूप धारण कर लेता है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को चेतावनी दी थी, "सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।" (1 थिस्सलुनीकियों 5:22)।

याकूब ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुए कहा, "परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंस कर परीक्षा में पड़ता है।" (याकूब 1:14)।

इसी संदर्भ में 15 पद को भी देखें कि पाप का परिणाम क्या होता है, "फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जानती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।"

पाप की जो "मिठास" होती है वह आरंभ में मनुष्य को पाप करने के लिये एक प्रकार की शक्ति प्रदान करती है कि वह पाप करने के लिये मजबूर हो जाए। "अभिलाषा एक गलत इच्छा है जो पाप के रास्ते पर धकेलती है।"

पौलुस ने रोमियों की मण्डली को चेतावनी दी थी, "इसलिये पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो।" (रोमियों 6:12)। इसके बाद अगले ही पद में उसने उनको मना किया, "और न अपने अंगों को अधर्म के हत्यार होने के लिये पाप को सोंपो पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सोंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी ....." (रोमियों 6.13-14ए)।

याकुब ने भी अपने पाठकों को लिखा था कि, पाप मृत्यु को उत्पन्न करता है, परन्तु उपरोक्त पद में पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि जो अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करते है वह "जीवित रहते हैं।"

जब हम पाप के विषय में बात करते हैं तब हमारा इरादा इतना नीच नहीं होता जितना उसका परिणाम का होता है। उदाहरण के तौर पर इसको और स्पष्ट तौर से

समझने के लिये मैं एक यूनानी पौराणिक कथा का वर्णन करता हूं। प्रसिद्ध ठगी करने वाली स्त्रीयां, जो वास्तव में अपसराएं और थीं एक टापू पर रहती थी जो आने-जाने वाले नाविकों को अपने गीतों के आकर्षण से प्रभावित करके विनाश की ओर ले जाती थी।

ओर्डसियस जो एक काल्पनिक यूनानी हीरो था उसने पक्का इरादा कर लिया था कि इन अपसराओं का शिकार न हो, इसलिये उसने अपने साथियों के कानों में मोम डालकर बंद कर दिया और अपने आपको जहाज के खम्बे से बांध दिया ताकि वह और उसके साथी इन अपसराओं की ओर आकर्षित न हो सके। यह तो केवल एक काल्पनिक घटना है, परन्तु शिमशोन को तो एक असली प्रलोभन से निपटना पड़ रहा था। आज के युग में हम शैतान और उसके उपकरणों युक्तियों के साथ रहते हैं, "सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए।" (1 पतरस 5:8)।

हम उसके शिकार न बनें, इससे बचने के लिये हम क्या कर रहे हैं?

आपत्तिजनक बात यह थी कि कुरिन्थुस की मण्डली, "अविश्वासियों के साथ आसमान जुए में जुत रही थी" और अधर्म के कार्य कर रही थी (2 कुरिन्थियों 6:14)। जिसका प्रभाव उनके आत्मिक जीवन पर पड़ रहा था। इस कारण जो सलाह पौलुस ने उनको दी थी यह उनके लिये भी उपयुक्त है जो आज परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते है। उसने कहा, "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।" (2 कुरिन्थियों 6:17)।

यदि शिमशोन पवित्रता के विषय में परमेश्वर की आज्ञा मानता तो वह अलग रहता और किसी अशुद्ध वस्तु को न छूता। इसमें कोई दो राय नहीं कि उसका जन्म, उसका लक्ष्य, और जीवन का उद्देश्य परमेश्वर की तरफ से एक दान के रूप में थे। इन सब के बदले परमेश्वर ने आवश्यक ही उससे कुछ मांगा - और वो एक समर्पित पवित्रता वाला सेवा का जीवन। ऐसी ही अपेक्षा परमेश्वर आज हमसे करते हैं।

जो परमेश्वर की संतान है वे लोग, "एक चुना हुआ वंश, और राज पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हैं, इसलिये कि जिसने उन्हें अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करें।" (1 पतरस 2:9)।

हम एक पवित्र और शुद्ध जीवन व्यतीत कर सकते हैं यदि अपने आप को सांसारिक बातों से अलग रख कर परमेश्वर के सत्य के वचन के आज्ञाकारी हो।

"सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना 17:17)।

हमारा संसार आज पाप की कड़वाहट बनावटी मिठास प्रदान कर रहा है; थोड़ी देर के लिये इसका प्रभाव स्वादिष्ट लगेगा, परन्तु अन्त में इसका प्रभाव एक शक्तिशाली जहरीली दवा है। "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अंत में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन 14:12) हमें "पवित्र शास्त्र" में ढूंढना चाहिए और "आत्माओं को परखना चाहिए।

"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीती न करो, वरन आत्माओं को परखो कि वे

परमेश्वर की ओर से है कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (1 यूहन्ना 4:1)।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम उस वाचा के द्वारा बांधे हुए संबंध को जोखिम में तो नहीं डाल रहे जिसके कारण हम अपने आत्मिक जन्म के लिये बपतिस्मे में शामिल हुए थे, जिसके कारण हमें पापों की क्षमा प्राप्त हुई और मसीह यीशु में भरपूर हो गए थे (कुलुस्सियों 2:10-13)।

अनुवादक -भाई फैरल

"मेम्ने के जीवन की पुस्तक"

डेविड आर फ़ार

जब यीशु मसीह का यरूशलेम की अंतिम यात्रा करने का समय आया तब उसने सत्तर चेलों को नियुक्त किया और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने वाला था वहां उनको अपने आगे भेजा कि वह उसके आने की तैयारी करें। उसने उनको चेतावनी दी कि उनका विरोध होगा और उनसे कहा देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। यीशु मसीह के नाम में उनको पवित्र आत्मा की सामर्थ दी गई ताकि वह प्रेतआत्माओं को निकाल सके और बीमारों को चंगा करें। (लूका 10:21)।

यह अपेक्षा की जाती है कि जितने भी यीशु के पीछे चलने वाले हैं वह अपनी सफलता का बड़ा आनन्द मनायेंगे। इस प्रकार वे आनन्द करते हुए लौटे और उत्साहित होकर कहने लगे, "हे प्रभु तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।" यीशु ने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।" तौ भी यीशु ने उनका ध्यान और भी उत्तम बात की ओर दिलाया जो कि आश्चर्यक्रमों के करने से भी उत्तम है। यीशु ने कहा, "तौ भी इससे आन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में है, परन्तु इससे आन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।'' (लूका 10:17-20)।

यहां विचार करने की बात यह है कि बड़े-बड़े आश्चर्यक्रम करने के अलावा भी कुछ और उत्तम बातें है। यह वह आश्वासन है जो हर एक प्रभु की संतान को दिया जाता है कि उसका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है - यानि उसका नाम स्वर्ग में लिखा है।

स्वर्ग के प्रति जो पवित्र शहर है यूहन्ना ने लिखा, "परन्तु उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।" (प्रकाशित वाक्य 21:27)।

इस वास्तविकता को जानकर कि हमारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं हमें पता चलता है कि परमेश्वर हम में से हर एक को बड़ी गहरे तरीके से जानता है

अविनाशी वह हमें हमारे नाम से जानता है। इस बात पर जोर देकर कि वह मूसा की कितनी चिंता करता है, यहोवा ने मूसा से कहा, "कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।" (निर्गमन 33:17) यीशु ने अपने बारे में कहा, "अच्छा चरवाहा मैं हूं", मैं अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता हूं (यूहन्ना 10:30) पौलुस ने अपने उन फिलिप्पी में रहने वाले सहकर्मियों का जिक्र किया जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं (फिलिप्पियों 4:3) सरदिस की कलीसिया के नाम अपने पत्र में मसीह ने उनको यह आश्वासन दिया कि "सरदीस में तेरे यहां कुछ ऐसे लोग है जिन्होंने अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए ..... मैं उनका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा; पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।" (प्रकाशित वाक्य 3:4, 5)

परमेश्वर हमें हमारे नाम से जानता है, यह बात हमें स्मरण कराती है कि उद्धार कोई सामूहिक नहीं परन्तु व्यक्तिगत है। जीवन की पुस्तक में राष्ट्रों के नाम, परिवारों के नाम या कलीसियों के नाम नहीं लिखे हैं परन्तु हर एक का अपना निजी नाम लिखा हुआ है। यह उद्धार पाए हुए लोग मसीह की कलीसिया के सदस्य है, परन्तु उद्धार निजी विश्वास करने और आज्ञा मानने से प्राप्त होता है, "उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।" (1 पतरस 1:21)

इस बात पर महत्व देना आवश्यक है कि मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नामों की निश्चित सूची दी गई है। इसमें किसके नाम लिखे है यह बात सही तौर से केवल परमेश्वर ही जानता है। "प्रभु अपनों को पहचानता है।" (2 तिमुथियुस 2519)।

जीवन की पुस्तक में कोई गलती नहीं है, उसमें ऐसा कोई नाम नहीं लिखा गया जिसको वहां नहीं होना चाहिए और न ही ऐसा कोई नाम छोड़ा गया है जिसको वहां होना चाहिए। केवल दो ही श्रेणियां है जो जिम्मेदार व्यक्तियों की है; वह लोग जिन्होंने उद्धार प्राप्त किया और दूसरे वह जिनका उद्धार नहीं हुआ; जो लोग कलीसिया में है और दूसरे वह जो सांसारिक है; वह जिनके पाप क्षमा किए गए और दूसरे जो पाप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं; वह लोग जिनके नाम जीवन की पुस्तक में है और दूसरे वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं है।

जन्म के समय नाम रखे जाते हैं - नया जनम होने पर, जब कि- मनुष्य का दोबारा जन्म होता है, क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। (1पतरस 1:23)।

"क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो।" (गलतियों 3:26)।

हम क्या विश्वास करते हैं और संसार में जो पुस्तक बाइबल हमारे पास है उसमें लिखी आज्ञाओं को कितना मानते हैं, इसी से हम यह अंदाजा लगा सकते हैं कि जीवन की पुस्तक जो स्वर्ग में है उसमें हमारे नाम हैं या नहीं। यह जानना भी महत्त्वपूर्ण है कि जो नाम लिखे हुए हैं उनको हटाया भी जा सकता है। जो पाप पर विजय प्राप्त करने में आज्ञाकारी हैं उनके नाम नहीं हटाए जाएंगे, "जो जय पाए उसे

इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति उसमें से न काटूंगा; पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।" (प्रकाशित वाक्य 3:5)

तौ भी, एक भयंकर चेतावनी दी गई है कि, "यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।" (प्रकाशित वाक्य 22:19)

यूहन्ना ने अपने ईश्वर दर्शन के अंतिम निर्णय के बारे में लिखा है :

"फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक, और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशित वाक्य 20:12-15)।

अनुवादक-भाई फैरल

यीशु मसीह की बचाने वाली शक्ति

परमेश्वर का अद्‌भुत प्रेम

क्या आपने मसीह की अद्‌भुत कहानी के बारे में सुना है, जिसने आपके लिये अपनी जान दी है? बाइबल अनेक बार परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम के बारे में बताती है। जैसे आप परमेश्वर के प्रेरित वचनों का अध्ययन पवित्र शास्त्र से करते हैं तो उन पर ध्यानपूर्वक मनन करें।

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8) क्या यह उसका आश्चर्यजनक अनुग्रह नहीं है? उसने हमसे इतना प्रेम किया कि जब हम पापी ही थे तभी उसने हमारे लिये अपने प्राण दिये।

"परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उसे बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)" (इफिसियों 2:4, 5)।

यह बड़े उद्धार का कार्य तब पूरा हुआ जब परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को क्रूस की मृत्यु, सहने के लिये भेजा, ताकि वह अपने लहू से हमारे पापों का दाम चुकाए। क्या आप इस बात को पूर्ण रूप से समझते हैं कि आप परमेश्वर के लिये कितने महत्वपूर्ण हैं? हम यूहन्ना 3:16 में पढ़ते हैं, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलोता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

पवित्र शास्त्र हमें बाताता है कि, "हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा

अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।" (इफिसियों 1:7)।

मसीह के लहू के बिना हमारे पाप नहीं मिटाए जा सकते थे, क्योंकि बाइबल में इब्रानियों 9:22 में लिखा है, "बगैर लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।"

यह उद्धार का मुफ्त का दान परमेश्वर के आश्चर्यजनक अनुग्रह का प्रतिफल है। प्रेरित पौलुस ने इफिसियों की कलीसिया को लिखा, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कामों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9)

इतने बड़े उद्धार को प्राप्त करने के लिये हम कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि हमें बताया गया है कि, "और उसने हमारा उद्धार किया, और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के, अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा से हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:5)

पहली आवश्यक बात जिस पर आपको ध्यान देना हैकि आप एक पापी है और आपको एक बचाने वाला चाहिए। परमेश्वर के वचन में हमको बताया जाता है कि, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है" (रोमियों 3:23), और "हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं।" (यशायाह 64:6)

हमें यह भी चेतावनी दी जाती है, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23)

आप ऐसा सोचे कि कोई और दूसरा रास्ता होगा जिससे होकर आप स्वर्ग में प्रवेश कर सके, परन्तु परमेश्वर का वचन, जिसमें कोई गलती नहीं है, हमें बताता है। "ऐसा मार्ग है; जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अंत में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन 14:12)

क्या आप परमेश्वर के प्रेम के दान को और उस मार्ग को, जो स्वर्ग को जाता है, स्वीकार करेंगे। यूहन्ना 14:6 में प्रभु यीशु मसीह अपने स्वयं के बारे में कहते हैं, "मार्ग और सत्य और जीवन में ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"

बाइबल हमें पश्चात्ताप और विश्वास की आवश्यकता का वर्णन करती है।

परमेश्वर का वचन प्रकट करता है कि, "परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों 17:30)

हमें यह भी शिक्षा मिलती है, "मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (मरकुस 1:15)

"क्योंकि, जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" (रोमियों 10:13)

कोई और मार्ग नहीं है जिसके द्वारा परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता हो और हम यह चाहे कि किसी रोज हम स्वर्ग में चले जाएं, यह तब ही संभव है जब हम अपने पापों से मन फिराएं, यीशु मसीह को अपने हृदय में जगह दें, और विश्वास के

साथ उसको अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण करें। क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर की यह इच्छा है कि वह आपका व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता हो। आपके जीवन में जो कमी है क्या आप उसको सांसारिक अभिलाषाओं से पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हैं और फिर भी कहीं न कहीं कुछ कमी है? यीशु मसीह की यह इच्छा है कि वह उस खाली स्थान को किसी और चीज से नहीं परन्तु स्वयं अपने आप से उसे भरे। उसने फैसला आपके हाथ में रखा है। क्या आप यीशु को चुनेंगे और अपने हृदय में आमंत्रित करेंगे? दूसरा पतरस 3:9 में इस प्रकार लिखा है कि प्रभु, "नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो; वरन यह कि, सबको मन फिराव का अवसर मिले।"

परमेश्वर का वचन हमें चेतावनी देता है, "परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान रात्रि में आ जाएगा।" (2 पतरस 3:10)

यदि आज यीशु मसीह आ जाए तो क्या आप उससे मिलने को तैयार है? आप तैयार हो सकते है। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूं कि आप पहला कदम उठाएं, और जैसा यशायाह भविष्यद्वकता ने यशायह 55:6 में कहा है, "जब तक यहोवा मिल सकता है, तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है, तब तक उसे पुकारो।"

प्रिय पाठक, "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।" (इब्रानियों 4:7)।

"देखो, अभी वह उद्धार का दिन है" (2 कुरिन्थियों 6:2)।

कल बहुत देर हो चुकी होगी, "और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा। सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती हो फिर लोप हो जाती है।" (याकूब 4:14)।

इस हवाले से हमने देखा कि हमारा जीवन भाप के समान है। ऐसा कोई आश्वासन नहीं है कि हम लम्बी आयु प्राप्त करेंगे, इसलिये हमें यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने के फैसले में देर नहीं करनी चाहिए।

"देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है।" (2 कुरिन्थियों 2:6)।

क्या इसी समय आप अपना सिर झुका कर परमेश्वर के सामने यह स्वीकार करेंगे कि आप एक पापी है और आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

क्या आप परमेश्वर के वचन से इस बात से सहमत होंगे कि आप अपनी किसी खूबी (अच्छे कामों) से स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते? बाइबल हमें बताती है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों 3:10) और "कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों 3:12) क्या आप यह विश्वास करने के लिये सहमत है कि अपने पापों से मन फिराएं और यीशु मसीह को अपने हृदय में आने के लिये आमंत्रित करें।

पवित्र वचन हमसे एक प्रतिज्ञा करता है, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों 16:31)

यदि आप परमेश्वर के पुत्र में विश्वास न करके उसको अपना उद्धारकर्ता ग्रहण नहीं करते और ऐसा करने से परमेश्वर के प्रेम का विरोध करने का फैसला करते

है तो आपका घर एक नरक बन जाएगा। जैसा कि बाइबल में "धनी मनुष्य और गरीब लाचार" का वर्णन है। (लूका 16:19-24)

मेरे मित्र, नरक एक वास्तविकता है, एक सच्चाई है, और परमेश्वर यह कदापि नहीं चाहता कि कोई भी नरक में अनन्त जीवन व्यतीत करे, परन्तु उसकी इच्छा यह है कि आप अनन्त जीवन स्वर्ग में व्यतीत करें और आप ऐसा तभी कर सकते हैं, जब आप परमेश्वर के महान अद्‌भुत प्रेम के दान को स्वीकार करने का फैसला लें। आप शायद पूछें, "यीशु मसीह मुझसे कितना प्रेम करते है" उसका उत्तर है, "इतना ज्यादा", और उसने दोनों हाथ फैलाए और अपने प्राण त्याग दिये..... आपके और मेरे लिये।

"प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।"

"हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया।" (1 यूहन्ना 4:10, 19)

यूहन्ना 1:12 में हमें एक निश्चित प्रतिज्ञा का आश्वासन मिलता है जहां हम पढ़ते हैं, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।"

यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करके, यदि आपने स्वर्ग में जाने के परमेश्वर के बताए गए मार्ग को चुनने का निर्णय ले लिया है तो अब आप मसीह यीशु में एक नई सृष्टि हैं।

"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई है।" (2 कुरिन्थियों 5:17)

अब मैं आपको बताऊंगा कि किस प्रकार प्रतिदिन आप एक विजयी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

किस प्रकार से एक विजयी मसीही जीवन जिया जा सकता है

परमेश्वर चाहता हैं कि हर एक मसीही यह जाने कि किस प्रकार पापी स्वभाव पर विजय और अधिकार और पाप के बंधन से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

रोमियों 6:1 में प्रेरित पौलुस हर एक विश्वासी से एक प्रश्न पूछते हैं, "तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?"

इसका उत्तर वह दूसरी आयत में देते हैं, "कदापि नहीं। हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएं?"

इस विजयी जीवन का उत्तम भेद हमें रोमियों 6:6-7 में मिलता है, जहां लिखा है, "हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्य उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दास्तव में न रहे। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा।"

हां, मेरे मित्र, आपका पापी स्वभाव तो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया गया। आपके जीवन के तमाम पाप उसी पापी स्वभाव के कारण हैं जो आपके जन्म से ही आपके साथ जुड़े है। इन पापों के कारण, जो हमारे पुराने पापी स्वभाव से उत्पन्न होते

हैं, जानने के लिये यह उदाहरण पढ़िये - गलतियों 5:15; 19:21; याकूब 3:14-16 और कलुस्सियों 3:8

परमेश्वर चाहते हैं कि सर्वप्रथम आप यह जाने कि पवित्र वचन पापी स्वभाव के प्रति क्या कहता है। इसका जानना उस भरपूर विजयी जीवन को व्यतीत करने के लिये अति आवश्यक है जो हमको मसीह यीशु में मिलता है।

इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि आप कभी पाप नहीं करेंगे। जब तक हम इस नाशवान शरीर में है, हम कभी भी मसीह के उस सिद्ध, निषपाप जीवन से अपनी तुलना नहीं कर सकते। हम 1 यूहन्ना 1:8 में पढ़ते हैं, "यदि हम कहे कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हममें सत्य नहीं।"

परन्तु, अगली आयत हमें अश्वस्त करती है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"

अपने रोज के अनुभव में हम पाप के प्रभाव से अजादी प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर का वचन हमें बताता है, "तुम पर पाप की प्रभुत्ता न होगी" (रोमियों 6:14)

क्या आप परमेश्वर के वचन पर विश्वास करेंगे? आपको हमेशा यह ध्यान रखना चाहिये कि आपका पापी स्वभाव मसीह के साथ उसके क्रूस पर मर गया। तुम भी अपने आपको, "पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो" (रोमियों 6:11)

परमेश्वर आपसे यह अपेक्षा करते हैं कि इस सच्चाई को आप अपने रोज के जीवन से दर्शायें और इसका अनुसरण करें। परमेश्वर आपके ऐसे किसी पाप पर विजय नहीं देंगे जिसको आप स्वयं छोड़ना नहीं चाहते, इसलिये यह चुनाव आपका होगा कि आप परमेश्वर की आज्ञा को मानेंगे और "पाप तुम्हारे नाशमान शरीर में राज्य न करे।" (रोमियों 6:12)

यह भी आपको चुनाव करना होगा कि आप पाप के आधीन न हो; परन्तु, "अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपा।" (रोमियों 6:13)

आपको यह जानना अवश्य है, "कि जिसके आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आपको दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो. चाहे पाप के, जिसका अंत मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के, जिसका अंत धार्मिकता है।" (रोमियों 6:16)

परमेश्वर ने पहले हो से इस भरपूर, विजयी जीवन का, जो मसीह यीशु में मिलता है, उपलब्ध करा दिया है, परन्तु चयन आपको करना है कि आप इस उपलब्धी को स्वीकार करके उस विजयी जीवन को प्राप्त करेंगे।

यह विजय जो मसीह ने आपके लिये क्रूस पर जीती आपकी हो जाती है जैसे ही आप मसीह को अपना उधारकर्त्ता ग्रहण करते हैं। यदि आप मसीह में एक विजयी जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो आपको अपना दृष्टिकोण अनुभव में बदलना होगा। यदि आप केवल परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेंगे तो एक मसीही होने के नाते आपको कभी भी हार और निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि बचन हमें

बताता है, "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिये फिरता है।" (2 कुरिन्थियों 2:14)

आवश्यक है कि आप परमेश्वर के वचन के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें और यह तब ही संभव है जब आप वचन की आज्ञाओं को मानेंगे जो हमें बताता है कि, "तुम पिछले चाल चलन के पुराने मनुष्त्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार दो और नये मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।" (इफिसियों 4:22, 24)

इसी से मिलते जुलते एक और छोटे हवाले से स्पष्ट होता है, "प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।" (रोमियों 13:14)

और ऐसा करने से, आप पाप के स्वभाव को पूरा करने का उपाय नहीं करेंगे। हम गलतियों 5:16 में पढ़ते हैं, "आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरा न करोगे।"

इसी अध्याय में हम आगे देखते हैं, "और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाशाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" (गलतियों 5:24)

महान प्रेरित पौलुस ने अनुभव किया कि किस प्रकार वह पाप की शक्ति और प्रभुता से मुक्त किया गया था और उसने बड़े आनन्द से घोषणा की, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैं; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं, तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है। जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" (गलतियों 2:20)

बाइबल हमें यह भी शिक्षा देती है कि मसीहों का एक और दुशमन है; और वह है शैतान, जो आपके पाप के स्वभाव को दासत्वता में रखना चाहता है, परन्तु आपकी आजादी के लिये मसीह ने दाम चुका दिया है। मसीह ने शैतान पर विजय प्राप्त कर ली है, उसके कामों को क्रूस पर नष्ट करने के द्वारा, "और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्म-खुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय, जयकार की ध्वनि सुनाई।" (कुलुस्सियों 2:15)

हम यह भी पढ़ते हैं, "कि परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रकट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।" (1 यूहन्ना 3:8) अब हमें उस विजय का लाभ उठाना चाहिए जो मसीह यीशु की क्रूस की मृत्यु के द्वारा शैतान पर प्राप्त हुई।

याकूब 4:7 में लिखा है, "इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे सामने से भाग निकलेगा।"

ऐसा करके आपने परमेश्वर की आज्ञा को मानकर यह चुनाव किया है कि अब आप पाप के लिये मर गए और अब आप पर उसकी कोई प्रभुता नहीं। "ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये जीवित समझो" (रोमियों 6:11)

अब जबकि आपने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों सहित उतार दिया, और नये मनुष्यत्व (मसीह) को पहिन लिया है (कलुस्सियों 3:9बी)

तो, जैसा पौलुस कुलुस्सियों 3:5 में समझाता है वैसा ही करें, "अपने उन अगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं।" (कुलुस्सियों 3:8-10)

इसका अर्थ यह हुआ कि हर नए आविष्कार किये गये पाप को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दें जहां यीशु ने पाप और पाप से भरे शरीर के लिये अपने प्राण दिये। "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पाप बलि होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।"

अब आप याकूब 4:7 के दूसरे आधे भाग की आज्ञा को मान सकते हैं, जहां लिखा है, "शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा।"

इफिसियों 6:11 एक मसीही के लिये लिखता है, "परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के समाने खड़े रह सको।''

शैतान एक हारा हुआ दुश्मन है और मसीह ने आपको एक मसीही होने के नाते, उस पर विजय दिलाई है।

शैतान के सामने परमेश्वर के वचन को दोहराने से न डरें और उससे कहें, "मुझे मालूम है, तुम हार चुके हो" एक विजयी मसीही होने के नाते आपको परमेश्वर की आज्ञा माननी पड़ेगी और शैतान का सामना करना पड़ेगा। क्या आप परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने के लिये एक बच्चे के विश्वास की तरह और उसकी आज्ञा मानने के लिये सहमत है।

यदि हां, तो आप इस महान उद्धार का आनन्द ले सकते हैं जिसको परमेश्वर ने आपको दिया है।

अनुवादक - भाई फैरल

धनी जवान हाकिम से जिस प्रकार के धर्म की मांग की गई थी

(मत्ती 19:16-22)

कॉय रोपर

यीशु द्वारा की जाने वाली बड़ी मांगे हमेशा प्रेम के कारण ही दी जाती है

इस घटना को लिखते हुए मरकुस कहता है:

यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उससे कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे,..... और मेरे पीछे हो ले (मरकुस 10:21)।

यीशु ने यह महान बात प्रेम के कारण पूछी; उस जवान हाकिम के करने के

लिए वास्तव में यह सबसे बढ़िया बात थी। यीशु यह जानता था और उससे प्रेम करने के कारण उसने उससे ऐसा करने को कहा। यीशु आप से भी प्रेम करता है, इसीलिए वह आपसे उसे सब कुछ देने को कहता है।

धन लोगों को परमेश्वर के राज्य से बाहर रख सकता है

धन आप को उद्धार पाने से दूर.... और स्वर्ग से बाहर रख सकता है। "और नहीं नहीं," कोई आपत्ति करता है, "धन बाहर नहीं रखता बल्कि धन का प्रेम रखता है।" आपने बिल्कुल सही कहा। समस्या यह है कि हमारे समाज में जो लाभ का भूखा, धन की टोह लेने वाला है, सफलता के पुजारी समाज के लिए धन के प्रेम से दूर रहना कठिन है, चाहे हमारे पास यह हो या न। हम में से कितने लोगों ने वैसे ही प्रतिक्रिया दी होती जैसे जवान हाकिम ने प्रभु द्वारा उससे यही करने को कहा था? और बिल्कुल उसी कारण यानी हम अपने धन से प्रेम करते हैं? हम सब जानते हैं कि धन से प्रेम करना मूर्तिपूजा हो सकता है और मूर्तिपूजा के कारण कई लोग नरक में जाएंगे। क्या आपके साथ ऐसा हो सकता है?

प्रभु हर किसी से वही मांग करता है?

क्या आपको सही लगता है कि प्रभु इस जवान आदमी से हर बात पूछता है? उसने यह क्यों पूछा? "क्योंकि प्रभु उससे प्रेम करता था" और वह उस जवान के मन में देख रहा था, जिसमें यीशु देख सकता था कि वह जवान परमेश्वर से प्रेम करने से अधिक अपने धन से प्रेम करता था और उस जवान और उद्धार के बीच उसका धन ही था। प्रश्न: क्या यीशु ने कुछ अधिक ही नहीं मांग लिया? उत्तर: नहीं! यीशु द्वारा उसे बदले में जो कुछ दिया जाना था उस सब के कारण!

परन्तु हम फुर्ती से कह सकते हैं कि यीशु हर किसी से ऐसा नहीं कहता। इससे मेरा यह मतलब नहीं है कि आपको अपना सब कुछ यानी अपनी कार, अपना घर आदि बेचना और बैंक से अपना सारा पैसा निकालना पड़ेगा। यीशु आपसे वही बात एक अर्थ में कहता है कि वह आपका सब कुछ मांगता है।

वह कहता है कि आपको पूरी तरह से परमेश्वर से प्रेम करना होगा (मत्ती 22:37)। आप को पहले परमेश्वर के राज्य को ढूंढ़ना (मत्ती 6:33)। आप को अपने घर, अपने देश, अपने माता-पिता, अपने पति या पत्नी, अपने बच्चों, अपनी जमीन, अपने धर्म यहां तक कि अपने जीवन से भी अधिक प्रभु से प्रेम करना होगा (लूका 14:26, 27, 33)। नये नियम के अनुसार मसीही व्यक्ति वह है जो कहता है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20); यही आदमी कहता है, "यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं; सो हम जीएं या मरे; हम प्रभु ही के है" (रोमियों 14:8); यही आदमी कहता है, "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ है" (फिलिप्पियों 1:21)।

यदि ये बातें सही हैं (और हैं भी), तो क्या प्रभु आपसे उस जवान हाकिम से

की गई मांग से कुछ कम मांगता है? हो सकताहै कि आप को जो कुछ आपके पास है उसे बेचने की आवश्यकता हो, परन्तु आप को मसीह के कारण, जो कुछ आपका है वह सब देने के लिए, जिसमें आप भी हैं हर चीज का इस्तेमाल प्रभु के लिए करना होगा। धनवान हाकिम से यीशु ने यही कहा था और वह आपसे और मुझ से भी यही कहता है।

क्या यह क्रांतिक लगता है? हां।

परन्तु आमतौर पर हम क्रांतिक कहलाना नहीं चाहते। जब तक क्रूस गद्दीनुमा, अच्छी तरह से फिट किए, आधुनिक सजावटी और उच्च श्रेणी के होंगे तब तक हम अपने क्रूस ले जाएंगे। परन्तु हम क्रांतिक न बनें। हमें एक आरामदायक, रूढ़ीवादी, अहानिकार, अच्छा माने जाने वाला नाव को न हिलाने वाला धर्म.... मसीहियत मिला है जो दीन और विनम्र है.... एक ऐसा विश्वास जो संसार को हिलाता नहीं है, बल्कि "बहाव के साथ बहने वाला है।" परन्तु "क्रांतिक"? नहीं, धन्यवाद।

हम उन लोगों को सुनते हैं जो हर दूसरी सांस लेने पर "जय मसीह की" कहते हैं और फुसफसाते हैं, "परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैं इनमें से किसी के जैसा नहीं हूं।" हम उन लोगों को देखते हैं जो हर जगह यहां तक कि किराना की दुकान पर भी यीशु की गवाही देते हैं और लोगों से पूछते हैं, "क्या आपका उद्धार हो गया है?" और हम मन ही मन उनकी तारीफ करते हुए सोचते हैं: "वे हर किसी के सामने कितने अजीब लगते हैं।" हम लोगों को बाजार में जाते, लोगों के दरवाजे खटखटाते, लोगों को अपना धर्म "बेचने" की कोशिश करते हुए देखते हैं और सोचते हैं, "कितना मूर्ख है। कितना साधारण है। कितना बुरा है। कितना बेकार है। मैं ऐसा करते हुए मरूंगा नहीं।" और हम ऐसा करते हुए न तो मरते हैं और न जीते हैं। फिर ऐसे धार्मिक लोग हैं जो किसी शो में नहीं जाएंगे.... विशेष प्रकार के कपड़े नहीं पहनेंगे. .. कुछ भी हो जाने पर कलीसिया में जाना बंद नहीं करेंगे.... उनके साथ कुछ गलत होने पर बदला नहीं लेंगे.... और हमें लगता है, "कैसी क्रांतिक हैं। अच्छा है, मैं उनके जैसा नहीं हूं।"

मेरा प्रश्न है कि मसीह को और आरंभिक कलीसिया को कौन बेहतर ढंग से प्रस्तुत करता है– जैसी क्रांतिक मसीहियत का विवरण मैं दे रहा हूँ... या आधे मन वाला, सामाजिक तौर पर स्वीकार हम में से अधिकतर का सुविधाजनक धर्म? उत्तर देने के लिए, विचार करें: क्या यीशु क्रांतिक था? क्या वह क्रूस पर आरामदायक, सामाजिक रूप से स्वीकार्य धर्म में जाने को तैयार था? क्या पौलुस क्रांतिक था? क्या लोगों ने उस पर पागल होने का आरोप नहीं लगाया था क्योंकि वह अपने उद्देश्य और अपने संदेश के प्रति इतना गंभीर था? (प्रेरितों 26:24)। क्या आरंभिक कलीसिया क्रांतिक थी? क्या बाइबल यह नहीं कहती कि उन्होंने "जगत को उलटा पुलटा कर दिया है?" (प्रेरितों 17:6)। जब यीशु ने उस धनी जवान हाकिम से अपना सब कुछ बेच देने को कहा तो क्या यह एक क्रांतिक मांग नहीं थी? और जब यीशु आपसे कहता है कि बाकी सब बातों से उसे पहल दो तो क्या यह क्रांतिक नहीं है?

यीशु की क्रांतिक मांगों को मानना हमारे ऊपर है

उस जवान ने यीशु की मांगे स्वीकार नहीं की, "वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था" (मत्ती 19:22)। यह प्रभु और उसकी कलीसिया के लिए कितनी बड़ी हानी थी। यदि वह जवान बिना शर्त के अपने आपको यीशु को देने को तैयार हो जाता है तो वह कितना भला कर सकता था। परन्तु सबसे बड़ी हानी उस जवान आदमी की अपनी थी क्योंकि उसने आशीषित होने (मत्ती 19:21, 29) और प्रभु के लिए उपयोगी होने का अवसर खो दिया। इससे भी महत्वपूर्ण यह कि उसने अनन्त जीवन पाने का अवसर खो दिया। वास्तव में दुखी होने का उसके पास उससे बड़ा कारण था जिसका उसे अहसास नहीं था। जब आज यीशु आपको बुलाए और आपको अपना सब कुछ उसे देने को कहे तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या आप पूर्ण समर्पण से उसके पास लौट आएंगे, या आप उस जवान की तरह, दूर चले जाएंगे? यह सब आप पर है।

हे हमारे पिता

ह्यूगो मेकोर्ड

उसे हमारी चिंता और परवाह है

अपने भाग्य पर कुड़कुड़ाते या अपने अभावों की शिकायत करने वाले को यूसूफ से दुर्व्यवहार होने के बावजूद उसके उत्तम व्यवहार से लज्जित होना चाहिए। जो कुछ उसके उत्तम व्यवहार से लज्जित होना चाहिए। जो कुछ उसके साथ हुआ, उस सब में पिता का हाथ था। यूसुफ का और मेरा पिता मुझे अपनी सारी चिंताएं अपने ऊपर डालने के लिए कहता है, क्योंकि वह हमें संभालता है (1 पतरस 5:7)। जब मैं बुड़बुड़ करने की परीक्षा में पड़ता हूं, तो वह मुझे धीरे से डांट देता है, "तू भूल गया है" कि पुत्र को भी कभी-कभी ताड़ना की आवश्यकता होती है (देखिए इब्रानियों 12:5)। पुराने और नए दोनों नियमों, में उसने मुझसे इस बात को समझने का अनुरोध किया है "कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है" (इब्रानियों 12:5ख, 6)।

कभी-कभी जब मैं अपने सांसारिक पिता से (कई बार रो-रोकर) कोई वस्तु मांगता था तो वह मुझे नहीं देता था। उसे पता होता था कि वह वस्तु देने से मेरा भला नहीं होगा। कई बार स्वर्गीय पिता मुझे अपने प्रेम के कारण वे वस्तुएं देने से इंकार कर देता है जो मैं उससे मांगता हूं। वह मुझसे अधिक जानता है। बूढ़ा होकर भी, मैं उसके सामने एक नवयुवक की तरह ही हूं। जब तक आप और मैं उसकी आज्ञाओं को मानते और वह काम करते हैं जो उसकी नजर में अच्छा

है, तब तक वह कभी भी हमारी प्रार्थना को सुनने और उसका उत्तर देने में असफल नहीं होता (1 यूहन्ना 3:22)। किसी वस्तु को बार-बार मांगने पर भी आपको न मिलने पर इंकार हो जाए, तो पौलुस के बारे में सोचिए, जिसने अपने शरीर में से कांटा निकालने के लिए बार-बार प्रार्थना की थी (2 कुरिन्थियों 12:8, 9)। विश्वास का वचन आपको आश्वासन देता है कि परमेश्वर ने कोई अच्छी वस्तु देने से आपको इंकार नहीं किया (भजन 84:11)। वह चाहता है कि आप जान जाएं कि आपकी प्रार्थना को उसके द्वारा ठुकराना आपके भले के लिए ही है।

यदि आप, यीशु की तरह ही, उसके सामने जो ऐसा सामर्थी है, आपकी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है (इफिसियों 3:20) "ऊंचे शब्द से पुकार-पुकार कर, और आंसू बहा-बहाकर" (इब्रानियों 5:7) प्रार्थना करें, तो वह आपकी इच्छा के अनुसार न करके आपको दुखी नहीं करेगा। जो कुछ आप मांग रहे हैं, हो सकता है उससे दूसरों का भला होता हो। प्रभु की आंखें पृथ्वी पर इधर से उधर घूमती रहती है (2 इतिहास 16:9) और उनका ध्यान आगे अनन्तकाल की ओर होता है। यीशु का पिता उसे दु:ख में नहीं देखना चाहता था, परन्तु उसकी प्रार्थना नहीं सुनी गई। यीशु का पिता ही आपका भी पिता है और वह आपको उस समय से जानता है जब आप पैदा भी नहीं हुए थे। क्योंकि वह आपको और मुझे जानता है और हमारी संभाल भी करता है, इसीलिए परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को कुचला और दु:ख में डाला (यशायाह 53:10)। इस प्रकार पिता को सदा प्रसन्न करने वाले की उत्साही और दयनीय प्रार्थना (यूहन्ना 8:29) की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। यदि पिता आपकी बार-बार की गई बिनती को नहीं मानता है, तो आपको याद रखना चाहिए कि आप उसके इकलोते पुत्र से अधिक नहीं है।

हमें उसकी वफादारी मिली है

आपको एक सर्वशक्तितमान पिता मिला है जो उस सबको संभालने के योग्य है जो आपने उसे सौंपा है (2 तीमुथियुस 1:12)। ऐसी अनन्त आशीष का आश्वासन देने के लिए जब तक आप उससे प्रेम करते हैं वह सब बातों को मिलाकर आपका भला ही करवाता है (रोमियों 8:28)। आपके जीवन में भला करवाने के लिए वह सब बातों को देखकर उनका प्रबंध कैसे कर सकता है? इस प्रश्न का उत्तर पाना आपके वश की बात नहीं है। आप केवल उस पर विश्वास करें, संदेह नहीं। उसने जो कुछ कहा है उसे वह अवश्य ही करेगा। परमेश्वर वफादार है। अविश्वास के कारण परमेश्वर की प्रतिज्ञा से डांवांडोल न हो, बल्कि पिता परमेश्वर को महिमा देते हुए, विश्वास में बढ़ते चले जाएं (रोमियों 4:20)।

जब आपको लगे कि जितनी मुसीबत आप पर आ सकती थी, वह आ चुकी है और मुसीबतों का ढेर लग जाएं, तो भी अंत तक आशा रखें ताकि आप मृत्यु तक वफादार बने रह सकें।

हमें उसका उद्धार मिला है

सब वस्तुओं से आपका भला करवाकर, वह न केवल आपके लिए व्यक्तिगत पूर्व प्रबंध (व्यक्तिगत और विशेष पूर्व प्रबंध) शेतान के आपके बहुत निकट आने पर वह आप पर अपना हाथ भी रखता है। वह आपको सामर्थ से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देता, बल्कि आपके मार्ग में आने वाली परीक्षा से निकलने का मार्ग उपलब्ध कराने की गारंटी भी देता है (1 कुरिन्थियों 10:13)।

आपका पिता परमेश्वर सबसे महान है, और मनुष्य या शैतान में आपको उसके हाथों से छीनने की सामर्थ नहीं है (यूहन्ना 10:28, 29)। आपका ही कोई ऐसा कार्य हो सकता है जिससे वह भला पिता आपको सदा के लिए निकाल दे (1 इतिहास 28:9), परन्तु यह सरासर आपकी गलती होगी। यदि आप स्वर्ग में जाना चाहते हैं, तो वह आपको गिरने से बचाने में समर्थी है और वहाँ पर आपको अत्यंत प्रसन्नता से अपनी महिमा के सामने निर्दोष प्रस्तुत करेगा (यहूदा 24)। बायीं ओर के लोग जो सदा के लिए दोषी ठहर चुके होंगे, परमेश्वर की ओर अंगुली करके यह नहीं कह पाएंगे, "तेरा ही दोष है"। नहीं, जब हम गलती करते है तो उसे कष्ट होता है, और उस धर्मी परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए और अपने साथ रखने के लिए जो भी किया जा सकता था, किया है।

तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगंध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिर कर जीवत रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने-अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो (यहेजकेल 33:11)।

पिता चाहता है कि जब मनुष्यों का उद्धार हो (1 तीमुथियुस 2:4)। वह नहीं चाहता कि किसी का नाश न हो (2 पतरस 3:9)। जैसे सांसारिक पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही स्वर्गीय पिता उन पर दया करता है जो उससे डरते हैं, क्योंकि वह हमारी निर्बलताओं को जानता है, और उसे ध्यान हैं कि हम तो धूल ही हैं (भजन 103:13)। वह "अत्यंत करूणा और दया" करने वाला (याकूब 5:11)।, "दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है" (भजन 103:8)।